P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नक्सलवादः आन्तरिक सुरक्षा के लिए चुनौती

सारांश

पश्चिमी बंगाल के नक्सलवादी गांव से चारू मजूदार और कानू सान्याल के नेतृत्व में 1969 में भूमि अधिग्रहण को लेकर आंदोलन ने जन्म लिया, आंदोलनकारी नेताओं का मानना था कि, ''जमीन उसी को मिले जो उस पर खेती करें'' पिछले कुछ दशकों से भारत नक्सलवाद के दंश को न केवल आन्तरिक सुरक्षा के रूप में झेल रहा है अपितु वाह्य सुरक्षा भी इससे प्रभावित हो रही है। नक्सलवाद आज राष्ट्र की एक ज्वंलत समस्या बन चुकी है, जिससे छुटकारा पाना अति आवश्यक है। इसके लिए हमारी सरकार को कुछ उपाय करने की आवश्यकता है। जिनके द्वारा नक्सलवाद का पूरी तरह से खात्मा न सही परन्तु उस पर काफी हद तक रोक तो लगायी जा सकती है। अथवा रोक लगाने की कोशिशें तो की जा सकती है। नक्सलियों द्वारा आज नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कई घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। तथा भारतीय सरकार द्वारा समय–समय पर आन्तरिक सुरक्षा को बनाये रखने के लिए नक्सलियों के विरूद्ध चलाये गये अभियान तथा नक्सलियों को मुख्य धारा में लाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

अवतार सिंह नेगी
विभागाध्यक्ष,
सैन्य विज्ञान,
राजकीय महाविद्यालय,
वेदीखाल, पौड़ी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

मुख्य शब्द : नक्सलवाद, आंदोलनकारी।

प्रस्तावना

किसी भी देश क लिए उसकी सुरक्षा सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है। देश की सुरक्षा के समकक्ष अन्य समस्त मुद्दे महत्वहीन होते हैं। कोई भी देश और वहाँ के नागरिक तभी उन्नति कर सकते हैं जब उस देश में अमन –चैन होगा। देश के सम्मुख आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने तथा उससे बचने अथवा रोकने हेतु उपाय करना सबसे प्रमुख कार्य है।

भारत को विश्व बिरादरी में एक ऐसे सांस्कृतिक विभिन्नता वाले देश के रूप में जाना नाता है, जहाँ पर विभिन्न धर्मो, जातियों, सम्प्रदायों के लोग आपसी सद्भाव के साथ रहते हैं किन्तु स्वतंत्रता के 65 वर्शों के पष्चात् भी राष्ट्रीय एकता क्षेत्रवाद, अलगाववाद आदि अनेक विघटनकारी प्रवृतियाँ अपना सर उठाये खड़ी है। आंतरिक सुरक्षा से हमारा तात्पर्य हिंसात्मक अरजकता एंव विघटनकारी ताकतों से राष्ट्र की स्थिरता, अस्तित्व आदि की रक्षा करने से है। भारत की एकता और अखण्डता के लिए विद्यमान समस्याओं में आतंकवाद के साथ– साथ नक्सलवाद भी एक गम्भीर चुनौती के रूप में उभरा है। विगत कुछ वर्शों तक नक्सलवाद एक क्षेत्रीय समस्या के रूप में जाना जाता था, किन्तु अब यह एक राष्ट्रीय समस्या का रूप धारण कर चुका है। वर्तमान समय में नक्सलवाद देश के लगभग 13 राज्यों के 170 जिलों और लगभग 45 करोड़ से ज्यादा जनसंख्या एवं लगभग 40 प्रतिषत भू–भाग के क्षेत्रों में फैल चुका है और लगातार अपने दायरे को बढ़ा रहा है।[1]

नक्सलवाद षब्द की उत्पति पश्चिम बंगाल के नक्सलवाड़ी गांव से हुई थी। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता चारू माजूमदार और कानू सान्याल ने 1969 में सत्ता के खिलाफ एक सषस्त्र आन्दोलन शुरू किया। माजूमदार चीन के कम्यूनिस्ट नेता आओत्से तुंग के बडे प्रशंसक थे। इसी कारण नक्सलवाद को 'माओवाद' भी कहा जाता है। 1968 में कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ मार्क्ससिज्म एंड लेनिनिज्म का गठन किया गया जिनके मुखिया दीपेन्द्र भट्टाचार्य थे। यह लोग मार्क्स और लेनिन के सिद्धातों पर काम करने लगे, क्योकिं वे उन्हीं से ही प्रभावित थे। वर्ष 1969 में पहली बार चारू माजूमदार और कानू सान्याल ने भूमि अधिग्रहण को लेकर पूरे देश में सत्ता के खिलाफ एक व्यापक लड़ाई शुरू कर दी। भूमि अधिग्रहण को लेकर देश में सबसे पहले आवाज नक्सलवाड़ी से ही उठी थी। आंन्दोलनकारी नेताओं का मानना था कि 'जमीन उसी को मिले जो उस पर खेती करें । नक्सलवाडी से शुरू हुआ इस आंदोलन का प्रभाव पहली बार तब देखा गया जब पष्चिम बंगाल से काग्रेंस को सत्ता से बाहर होना पड़ा।

इस आंदोलन का ही प्रभाव था कि 1977 में पहली बार पष्चिम बंगाल में कम्यूनिस्ट पार्टी सरकार के रूप में आयी और ज्योति बसु मुख्यमंत्री बने।[2]

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र के माध्यम से नक्सलवाद से आन्तरिक सुरक्षा को मिलने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना है। भारत में समस्या नक्सलवादी आन्दोलन की समस्या को समाप्त करने या कम करने के लिए सरकार द्वारा उनको मुख्यधारा मे लाने का प्रयास करना चाहिए, जिससे पिछले कुछ दशकों से भारत इस नक्सलवाद के दंश को न केवल आन्तरिक सुरक्षा के रूप में झेल रहा है, अपितु उसकी वाह्य सुरक्षा भी इससे प्रभावित हो रही है।

साहित्यावलोकन

डा0 राकेश चन्द्र कुवर ने 2010 में नक्सली संगठनों में पीपुल्स वार ग्रुप एंव एम0सी0सी0 माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर का विलय होने से नक्सलियों की ताकत में इजाफा को दर्शाया गया है। डा0 सुरेन्द्र कुमार मिश्र ने नक्सलादः एक राष्ट्रीय समस्या 2015 में नक्सलवाद को आन्तरिक सुरक्षा समस्या के खतरे के साथ– साथ विकास के लिए भी बड़ी चुनौती का संक्षेप में वर्णन किया गया है। डा0 विनोद मोहन मिश्रा एंव डा0 अभय कुमार श्रीवास्तव, नक्सलवाद भारतीय– परिपेक्ष्य में तूणीर 2006 में पृ0स0 64 में हिंसक घटनाओं के मूल में जातिवाद व साम्प्रदायिक विचारधाराएं की भूमिका को प्रकाशित किया गया है। डा0 भारती चौहान द्वारा नक्सली समस्या एंव भारतीय सुरक्षा तुणीर में मनोवैज्ञानिक पद्धति में लड़ी जाने वाली लड़ाई में नक्सलियों द्वारा प्रचार, अफवाह, एंव बुद्धि परिर्वतन के प्रयोग को बताया गया है। डा0 संजय कुमार, भारत की आन्तरिक सुरक्षा चुनौतियां 2011 पृ0सं0 54–55 में नक्सलियों का मख्य धारा से हट जाना एंव भू–स्वामियों द्वारा शोषण को उजागर किया गया है। उपर्युक्त साहित्य अवलोकन को मैनें अपनी जानकारी के अनुसार पूरा करने का प्रयास किया गया है।

ज्ञातव्य है कि माओवादी विचारधारा से प्रेरणा लेने वाले नक्सलवादी पार्टी गठन के दो साल बाद तक बहुत चर्चा में रहे। यह स्थिति जून, 1971 तक चली। नक्सलवाड़ी से शुरू यह आंदोलन दूर–दूर तक फैल गया और देश के हर भाग तक पहुंच गया, सिर्फ पूर्वोतर राज्य, गोवा, पांडिचेरी और अण्डमान निकोबार द्वीप के इलाके ही इससे अछूते रहे। इस आंदोलन के मुख्य सूत्रधार रहे चारू मजूमदार का अनुमान था कि ''भारत का हर कोना एक ज्वालामुखी बन चुका है। यह फूटने वाला ही था और भारत में बहुत ज्यादा उथल–पुथल की सम्भावना थी'। यही ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने सदस्यों का आह्वान किया। उनका संदेश था ''संघर्ष कहीं भी और हर जगह विस्तार करो। उसके सशस्त्र संघर्ष के अतिरिक्त आमजन के बीच भी अपने को ऊंचा उठाने का कार्य किया। कालान्तर में उसने छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा में भी आधार निर्माण कार्य आरम्भ किया, ओर उसे सफलता भी मिली। 21 सितम्बर,1999 को नक्सली संगठनो की ताकत में तब बहुत इजाफा हुआ, जब पीपुल्स वार ग्रुप तथा एम.सी.सी. (माओवादी कम्यूनिस्ट सेंटर) का विलय हुआ और एक नया संगठन सी.पी. आई. माओवादी का निर्माण हुआ।[3]

नक्सलवाद केवल कानून व्यवस्था का मामला नहीं है, बल्कि एक समस्या मानव व्यवहार की है। इसकी जड़े अन्याय बोध की भावना से जुड़ी है। नक्सली समस्या के पीछे गहरी सामाजिक– आर्थिक असमानताए छिपी हुई हैं। अब तक केन्द्र से लेकर राज्य सरकारों ने इस व्यवस्था को कानून – व्यवस्था का मामला मान कर हल करने की कोशिश की है। यही कारण है कि आज लगभग साढ़े तीन दशकों के बाद भी यह समस्या जस की तस बनी है।[4]

नक्सली हिंसा का सीधा सबंध उन इलाकों या समुदायों के विकास से है, जो आजादी को साढ़े छः दशक बाद भी हाषियें पर पड़े हैं तथा जिन्हें जीवन की मूलभूत सुविधाएँ भी आसानी से उपलब्ध नहीं है। यह समस्या आंतकि सुरक्षा के खतरे के साथ –साथ विकास के लिए भी बड़ी चुनौती है। विकास नहीं, तो नक्सली और नक्सली नही तो विकास के इस चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए बैठकों और फाइलों से आगे एक वैकल्पिक रणनीति तक जाने की जरूरत है। नक्सलवाद का प्रसार जिन इलाकों में हुआ है, उन पर भी गौर करना जरूरी हैं। ये मुल्क के सर्वाधिक पिछड़े इलाके हैं। इन इलाकों रहने वाले दलित आदिवासी तबके के लोगों के बीच नक्सलवाद फल–फूल रहा है। यह भी कहने की जरूरत नहीं है की आज भी इन लोगों का शोषण कई स्तरों पर होता हैं। नक्सलवाद की समस्या पर विचार करने वाले लागों को इन पिछड़ें इलाकों में रहने वाले लोगों की भौतिक परिस्थितियों पर भी ध्यान देने की जरूरत है। इनके जीवन से जुड़ी भौतिक स्थितियाँ ही नक्सलवाद के प्रसार के लिए जमीन तैयार करती है। इन इलाकों मिं जीवन की बुनियादी जरूरते भी ठीक से उपलब्ध नहीं है। ऊपर से कई तरह के शोषण चक्र का पेचीदा षिकंजा भी बरकरार है। इन इलाको में रहने वाले लागों की जीविका का साधन जल – जंगल और जमीन है। हर नए कानून के अनुसार स्थानीय कानून के अनुसार स्थानीय–जल जंगल और जमीन से इनका अधिकार कम किया जा रहा है। सदियों से जल–जंगल और जमीन पर इनका पुश्तैनी अधिकार चलता आ रहा था। एकाएक बेदखल होकर जीवन जीने का कोई दूसरा साधन इन्हें नहीं दिखता। कई तरह के गठजोड़ से हो रहे शोषण के दुष्चक्र से मुक्ति का कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखता। जाहिर है कि लोग नक्सली रास्ते के जरिए अपने अधिकर को बचाने की कवायद करते हैं। जवाब में सरकार सलवा जूडूम जैसे बर्बर तरीके से हिंसा भड़काने का काम करती है। इसलिए जरूरत है कि नक्सलवाद को सिर्फ एक समस्या मानकर उस विचार किया जाये, उन आंतरिक समस्याओं को दूर करने की कोशिश की जाये तो नक्सलवाद के प्रसार के लिए जमीन तैयार करती है।[5]

नक्सलवादी आन्दोलन आज देशी तथा विदेशी समर्थको के संरक्षण का परिणाम है। विदेशी शक्तियां अपनी सामरिक तथा कूटनीतिक रणनीतियों के अनुरूप भारतीय लोकतंत्र को अस्थिर करने का प्रयास नक्सलवादी आन्दोलन को सैन्य, आर्थिक तथा वैचारिक मदद प्रदान कर दें रहे है। भारतीय सामाजिक संरचना की विसंगतिया, अन्यायपूर्ण वितरण, भ्रष्टाचार से पीड़ित जन सामान्य के

सामने नक्सलवादी एक विकल्प का भ्रम उत्पन्न कर दें रहे है। या ये कह सकते हैं कि हम सामाजिक दशाओं को सुधारे बिना विसंगतियों को बढ़ने से रोक नहीं सकते हैं। जनतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली में नेता सामाजिक संरचना का बड़ी चालाकी से प्रयोग करते हैं। राजनेता जन समर्थन की प्राप्ति के लिए दीर्घकालीन वैकासिक रणनीति की बजाय समूहों की नीतियों का सर्मथन करतें है। नक्सलवादी आन्दोलन को भी विभिन्न राजनैतिक दलों के नेता अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देते रहे हैं। तीन दशक पूर्व अन्यायपूर्ण भू–स्वामित्व तथा शोषणकारी व्यवस्था के प्रत्युत्तर में आया यह जन आंदोलन आज सीधे सत्ता के विरूद्ध हो गया है। नक्सली अराजकता का पर्याय बनकर माफिया गिरोहों के तरह कार्य कर रहे हैं। उनका उद्देश्य भय के सहारे धन उगाही करना एवं वर्चस्व स्थापित करना हो गया है। गृह मंत्रालय की एक रिर्पोट के अनुसार माओवादी प्रभाव 2001 के 56 जिलों की तुलना में 2009 में 231 जिलों तक प्रसारित हो चुका हैं 231 में से 11 क्षेत्रों में 70 में से 40 जिले अत्यधिक संवेदनषीलहै।[6]

सन 1990 के दशक में नक्सली गतिविधियों में व्यापक मजबूती आयी और उन्होंने अपने सम्बन्धों को नेपाल के माओवादियों के साथ पुख्ता किया, तत्पष्चात पेरू, फिलीपाइन्स, श्रीलंका, बांग्लादेश के उग्रवादी संगठनों से भी अपने गठजोड़ स्थापित किये। नेपाल के माओवादियों से तो हथियार खरीदने के स्पष्ट प्रमाण मिल चुके हैं। विभिन्न नामों से सक्रिय माओवादियों ने देश के भीतर एक बडा नेटवर्क फैला रखा है, और पूर्वोतर भारत के उग्रवादी संगठनों से गहरे सम्बन्ध बना लिये हैं। वर्ष 1995 में बेल्जियम की वर्कर्स पार्टी ने लगभग 40 देशों के 60 संगठनों को मिलाकर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया, जिसमें 'पीपुल्स वार ग्रुप ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। 2001 में भारत, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश के 9 माओवादी संगठनों ने मिलकर एक संगठन बनाया, जिसका नाम ''कोआर्डिशेन कमेटीज ऑफ माओइस्ट पार्टीज एण्ड आर्गेनाइजेशन' रखा गया, जिसका लक्ष्य है दक्षिण एशिया की सभी माओवादी पार्टियों और संगठनों के गतिविधियों के मध्य समन्वय स्थापित करना।[7]

वास्तव में, विचार किया जाय तो स्पष्ट होता है कि नक्सली हिंसा की जड़ों को हमारे समाज के अन्दर से ही पल्लवित और पुश्पित होने का अवसर मिलता है। समाज में विद्यमान जातिवाद व साम्प्रदायिक विचारधाराएं हमेषा से विद्वेश की उर्वरक जमीन तैयार करती रही है। वस्तुतः अधिकतर हिंसक घटनाओं के मूल में जातिवाद की ही भूमिका होती है। आज जो नक्सलवाद अपने को 'पोशक वर्ग व्यवस्था' के विरूद्ध उग्र 'वैचारिक आंदोलन' के रूप में प्रस्तुत करता है, वह अपने कृत्यों से अन्ततः समाज को विभक्त करता है। तथा कथित उच्च जातियों के प्रति उसके भीतर घृणा ही भरी होती है। दूसरी तरफ कुंवर सेना व रणवीर सेना जैसे संगठनों के नेतृत्व में कतिपय उच्च जातियों के असामाजिक तत्व भी दलित जातियों के विरूद्ध ऐसा ही करते हैं। स्पष्टतः जातिवादी सोच, शोषण पर आधारित है।[8]

उल्लेखनीय है कि भूमि सुधार सम्बन्धी मागों को लेकर किये जाने वाले इस आन्दोलन के पीछे माओवादी गतिविधियाँ स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगी थी। नक्सलियों ने माओवादी युद्धनीति अपनाकर एवं जनसमर्थन प्राप्त करके अपनी कार्यवाहियां शुरू की। गुप्त स्थानों पर बैठकें आयोजित करके नक्सलियों को भर्ती एवं प्रशिक्षण करके जमींदारों, पुलिसजनों, तथा रानीतिज्ञों का दमन एवं हिंसा का प्रतिकार करने के उद्देश्य से वे अस्त्र–शस्त्र एवं प्रशिक्षत कार्यकर्ताओं से युक्त आधार क्षेत्र का निर्माण करके अपनीयोजायें बनाते, एवं अन्य लोगों से सशस्त्र संघर्ष के दौरान छिने गये हथियारों से अपने शस्त्र भण्डारों में वृद्धि करते हैं तथा व्यापक जनसमर्थन प्राप्त होने के बाद अपनी कार्यवाही शुरू करते हैं। जन समर्थन के माध्यम से ये अपने हर कार्य को आसानी से कर लेते हैं। मनोवैज्ञानिक पद्धति से लड़ी जने वाली इस लडाई में नक्सली निम्न तरीके अपनाते हैं।[9]

प्रचार

प्रचार के द्वारा नक्सली अपनी कार्यवाहियां शुरू करते हैं । प्रारम्भिक दौर में लधु अवधि के प्रचार द्वारा पम्पलेट वितरण करना, भाषण, दीवार पर लेखन कार्य, रैली, नाटक, प्रदर्शन आदि का सहारा लेते हैं। इसका प्रभाव कम समय तक रहता है। तत्पश्चात दीर्ध अवधि प्रचार का सहारा लेते हैं। जिसमें नक्सली साहित्य, पत्र–पत्रिकायें, पुस्तके, नारे व्यवहार आदि का प्रयोग किया जाता है। प्रचार के माध्यम से जनता को अपने कार्यों से अवगत करते हैं तथा जन सर्मथन प्राप्त करते हैं।

अफवाह

मनोवैज्ञानिक युद्ध में अफवाह का बहुत महत्व होता है। अफवाह में आँखों देखी बाते कहीं नही जाती बल्कि पूर्व धारणाओं के आधार पर कहानिंया बनाई जाती है। अफवाह फैलाने वाला उसकी जाँच नहीं करता है। इसका प्रभाव तेज होता है, तथा यह कम अवधि के लिए होता है। नक्सली सामान्यतः जनता के मध्य पुलिस उत्पीडन, हत्या बलात्कार जैसी अफवाहें ज्यादा फैलाने का उद्देश्य ग्रामीणों के मन में पुलिसवालों के प्रति ग्रामीणों के मन में पुलिसवालों के प्रति घृणा पैदा करना होता है। अफवाहें सुरक्षा बलों का मनोबल गिराती है।

बुद्धि परिवर्तन

बुद्धि परिवर्तन के द्वारा जनता के मस्तिष्क में बैठे पुराने विचारों को निकालकर नये विचार भरना है। नक्सली दो प्रकार से बुद्धि परिवर्तन का कार्य करतें है– पहला चुने हुए व्यक्तियों या समूह (जिसमें कामगार समूह, बुद्धिजीवी वर्ग एवं छात्र समूह होते है।) और दूसरा आम ग्रामीण जनता। चुने हुए व्यक्तियों के समूह के लिए नक्सली साहित्य एंव विचारधारा तथा आम जनता के लिए नाटक, भाषण, सशस्त्र प्रदर्शन, प्रशिक्षण आदि का प्रयोग किया जाता है। बुद्धि परिवर्तन के लिए रेलानाच का प्रयोग ज्यादा होता है। जिसमें ''शोषण के विरूद्ध संघर्ष'' को विशय के रूप में चुनतें हैं। रेलानाच का मंचन ग्रामीण एवं नक्सली दोनों मिलकर करते हैं।

नक्सली उत्साह एंव मनोबल से भरे हैं। अपने पक्ष को सही और कल्याणकारी मानते हुए जीतने पर विश्वास रखते हैं। नक्सली मनोबल और जीतने की आशा उनके उत्तेजना एवं प्रचार पर निर्भर करती है। माओवादी छापामार शैली में नक्सली कम उम्र से ही पारंगत हो जाते

हैं। अपनी फौज के लिए नेता नक्सली आदिवासी या निचले तबके के लागों को ही चुनते हैं, ताकि उनके भीतर दबे हुए असन्तोष का मनोवैज्ञानिक लाभ उठाया जा सक। गुरिल्ला पद्धति को अपनाने के साथ ही नक्सली बारूदी सुरगों से लेकर आई0ई0डी0 (एप्रावाइण्डज एक्सप्लोसिव डिवाइस) जैसे अत्याधुनिक हथियारों का भारी मात्रा में प्रयोग करते हैं तथा गतिशील युद्ध शैली में विश्वास रखते हैं।[10]

सामाजिक जागृति के लिए शुरू हुए इस आंदोलन पर कुछ सालों के बाद राजनिति का वर्चस्व बढ़ने लगा और आंदोलन जल्द ही अपने मुदों और रास्तों से भटक गया। जब यह आंदोलन फैलता हुआ बिहार पहुंचा तब यह अपने मुदों से भटक चुका था। अब यह लड़ाई सामाजिक जागृति के लिए शुरू हुए इस आंदोलन पर कुछ सालों के बाद राजनिति का वर्चस्व बढ़ने लगा और आंदोलन जल्द ही अपने मुदों से और रास्तों से भटक गया। जब यह आंदोलन फैलता हुआ बिहार पहुंचा तब यह अपने मुदों से पूरी तरह भटक चुका था। अब यह लड़ाई जमीनों की लड़ाई न रहकर जातीय वर्ग की लड़ाई शुरू हो चुकी थी। यहां से शुरू होता है उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग के बीच का उग्र संघर्ष जिससे नक्सल आन्दोलन ने देश में नया रूप धारण किया। श्रीराम सेना जो माओवादियों की सबसे बड़ी सेना थी, उसने उच्च वर्ग के खिलाफ सबसे पहले हिंसक प्रदर्शन करना शुरू किया।

इससे पहले 1972 में आंदोलन के हिंसक होने के कारण चारू माजूमदार को गिरफ्तार कर लिया गया और 10 दिन के लिए कारावास के दौरान ही उनकी जेल में ही मौत हो गयी। नक्सलवादी आंदोलन के प्रणेता कानू सान्याल ने आंदोलन के राजनीति का षिकार होने के कारण और अपने मुद्दों से भटकने के कारण तंग आकर 23 मार्च 2010 को आत्महत्या कर ली।[11]

भारत में नक्सलवाद की बड़ी घटनांए–:

1. 2007 छतीसगढ़ के बस्तर में 300 से ज्यादा विद्रोहियों ने 55 पुलिसकर्मियों को मौत के घाट उतार दिया था।
2. 2008 ओडिसा के नयागढ में नक्सलवादियों ने 14 पुलिसकर्मियों और एक नागरिक की हत्या कर दी।
3. 29 जून 2008 उड़ीसा के बालीमेला जलाश्य में नक्सलियों ने एक नाव पर सवार चार विशेष पुलिस अधिकारियों व 60 ग्रेहाउंड कमांडें पर हमला किया। 38 जवान मारे गए।
4. 2009 में महाराष्ट्र के गढ़चिरोली में हुए एक बड़े नक्सली हमले में 16 सीआरपीएफ जवानों की मौत हो गयी।
5. 13 जून 2009 झारखंड में बोकारों के पास एक छोटे से कस्बे में बारूदी सुंरग की चपेट में आकर 10 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई और कई घायल हो गए।
6. 2010 पश्चिम बंगाल के सिल्दा कैंप में घुसकर नक्सलियों ने 24 अर्द्ध सैनिक बलों को मार गिराया।
7. 2010 छतीसगढ़ के दंतेवाडा में हुए एक बड़े नक्सलवादी हमले में कुल 76 जवानों की हत्या कर दी जिसमें सीआरपीएफ के जवान समेत पुलिसकर्मी भी शामिल थे।[12]
8. 2012 झारखंड़ के गढ़वा जिले के पास बरिगवा जंगल में 13 पुलिसकर्मियों को मार गिराया।
9. 2013 छतीसगढ़ के सुकमा जिले में नक्सलियों ने कांग्रेस के नेता समेत 27 व्यक्तियों को मार गिराया।

नक्सलियों के विरूद्ध चलाये गये प्रमुख अभियान :–

आपरेशन ग्रे हॉडस (आन्ध्र प्रदेश)

आन्ध्र प्रदेश सरकार ने वर्ष 1989 में उक्त अभियान चलाया था इसे काफी सफल अभियान मना जाता है। क्योंकि अब तक राज्य में इसके बात 7000 नक्सली मारे जा चुके हैं तथा 2500 को मुक्ष्य धारा में समाहित किया जा चुका है। उक्त अभियान विशेष रूप से प्रशिक्षित 5000 जवानों की देख रेख में चला इन्होनें सुरक्षा तन्त्र मजबूत करके छोटे–छोटे समूहों में बंटकर गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनायी जो कामयाब रही इसकी सफलता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि जहां एक ओर वर्ष 2003 में नक्सली हमलों की संख्या 577 थी वहीं दूसरी और वर्ष 2008 में उक्त संख्या केवल 92 थी।

आपरेशन सलवा जुडूम (छतीसगढ)

छतीसगढ़ सरकार ने वर्ष 2005 में रज्य के बस्तर एवं दंतेवाडा जिलों में नक्सलियों से निपटने के लिए शान्ति मार्च के रूप में उक्त अभियान चलाया था। इसके अर्न्तगत आम लोगों को हथियारों का प्रशिक्षण देकर नक्सलवाद का मुकाबला करने की रणनीति बनायी गयी जिसमें स्थानीय लोगों को स्पेशल पुलिस आफिसर नियुक्त किया गया लेकिन यह अभियान असफल साबित हुआ क्योंकि राज्य में इसके बाद नक्सली गतिविधियां कम होने के बजाय बढ़ती चली गयी। फलस्वरूप 2009 में उक्त अभियान की गतिविधियां मृतप्राय सी हो गयी।

ऑपरेशन कोबरा (उड़ीसा)

उड़ीसा एवं छतीसगढ़ सरकार ने वर्ष 2009 में नक्सलियों के खिलाफ उक्त अभियान चलाया था जिसमें सी.आर.पी. एफ. एवं राज्य पुलिस के लगभग 2500 जवान शामिल थे, जिनकी संख्या भविष्य में बढाकर 10000 तक किया जाना प्रस्तावित है।.

ऑपरेशन हॉक (झारखण्ड)

भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए झारखण्ड, छतीसगढ, उड़ीसा, प.बंगाल और उत्तर प्रदेश के 70 नक्सल प्रभावित जिलों में उक्त अभियान चलाया जाना प्रस्तावित है।[13]

ऑपरेशन ग्रीन हंट

नक्सल प्रभावित राजयों में उक्त अभियान चलाया जा रहा है। केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों एवं राज्य पुलिस के बीच बेहतर समन्वय न होने से नक्सलियों के खिलाफ पिछले 6 माह से चल रहे ऑपरेशन ग्रीन हंट के नतीजे नकारात्मक नहीं रहे और 3 महीने के भीतर ही 100 से अधिक जवानो को अपनी शहादत देनी पड़ी।[16] उल्लेखनीय है, कि नक्सलियों की हिसंक गतिविधियों पर अकुंया लगाने के लिए सुरक्षा बलों के साथ कोया जनजाति के जवानें की बटालिन बनाई जानी चाहियें। ये जनजातिया जंगलो में रहती है। और गुरिल्ला युद्ध मं

पारंगत मानी जाती है। इस जनजाति के नैजवान ही घने जंगलों में नक्सलियों से निपट सकते है ग्रीन हंट की सफलता के लिये कोया कमांडोज को महत्व दिया जाना आवश्यक है।[14]

एकीकृत कमान का गठन

लाल आतंक से सर्वाधिक प्रभावित चार राज्यों ने यह स्वीकार कर लिया है कि बढ़ता हुआ नक्सलवाद किसी एक प्रांत की समस्या नहीं है। केन्द्र सरकार भी इसे एक रानीतिक समस्या न मानकर क्षेत्र का अधूरा विकास और अपराध की समस्या मान रही हैं इसलिए इससे मिलकर लड़ने के लिए छतीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा और प.बंगाल को 'एकीकृत कमान' बनाकर अभियान चलाने को कहा गया है। आन्ध्रप्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र चाहे तजो इसमें शामिल हो सकते है।[15] उल्लेखनीय है कि उक्त चार राज्यों में नक्सलियों के खिलाफ तंत्र और राज्य पुलिस एंव प्रशासन के बीच एकीकृत कमान बनाने का स्वतंत्र भारतमें यह अपनी तरह का पहला अनुभव होगा, हालांकि 1989 में जब कश्मीर में घुसपैठ एंव आतंक ने पैर पसारने शुरू किये थे तब अनौपचारिक तौर पर एकीकृत कमान का गठन किया गया था जो कि काफी हद तक सफल प्रयोग साबित हुआ। इस कमान का ढांचा निम्न प्रकार का होगा :

1. राज्य के मुख्य सचिव कमान के अध्यक्ष होगें।
2. सेना के रिटायर्ड मेजर जनरल सदस्य के रूप में होंगे।
3. केन्द्रीय सुरक्षा बल की ओर से महानिरीक्षक सदस्य के रूप में होंगे।
4. राज्य पुलिस की ओर से समकक्ष अधिकारी सदस्य के रूप में होंगें।
5. राज्य खुफिया तंत्र की ओर से समकक्ष अधिकारी सदस्य के रूप में होगें।[16]

स्टीपेलचेस अभियान

यह अभियान वर्ष 1971 में चलाया गया। इस अभियान में भारतीय सेना तथा राज्य पुलिस ने भाग लिया था। अभियान के दौरान लगभग 20,000 नक्सली मारे गये थे।

ग्रीनहंट अभियान

यह अभियान वर्ष 2009 में चलाया गया। नक्सल विरोधी अभियान को यह नाम मीडिया द्वारा प्रदान किया गया था। इस अभियान में पैरामिलेट्री बल तथा राष्ट्र पुलिस ने भाग लिया। यह अभियान छतीसगढ, झारखण्ड, आंध्र प्रदेश तथा महाराष्ट्र में चलाया गया।

प्रहार

3 जून 2017 को छत्तीसगढ़ राज्य के सुकमा जिले मे सुरक्षा बलों द्वारा अब तक के सबसे बड़े नक्सल विरोधी अभियान 'प्रहार' को प्रारम्भ किया गया। सुरक्षा बलों द्वारा नक्सलियों के चिंतागुफा में छिपे होने की सूचना मिलने के पश्चात इस अभियान को चलाया गया था। इस अभियान में केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के कोबरा कमाडों, छतीसगढ़ पुलिस, डिस्ट्रिक्ट रिर्जव गार्ड तथा इंडियन एयरफोर्स की एंटी नक्सल टास्क फोर्स ने भाग लिया। यह अभियान चिंतागुफा पुलिस स्टेशन के क्षेत्र के अदर स्थित चिंतागुफा जंगल में चलाया गया जिसे नक्सलियों का गढ़ माना जाता है। इस अभियान में 3 जवान शहीद हो गए तथा कई अन्य घायल हुए। अभियान के दौरान 15 से 20 नक्सलियों के मारे जाने की सूचना सुरक्षा बल के अधिकारी द्वारा दी गई। खराब मौसम के कारण 25 जून 2017 को इस अभियान को समाप्त किया गया।[17]

जहां सरकार नक्सलियों से निपटने की पुरजोर कोशिशों में लगी हुई है, वहीं लगातार हिसंक वारदातों को अजाम देकर नक्सली अपनी मंशा स्पष्ट रूप से दर्शा रहें है, कि वे अपने विरोध को प्रकट करने के लिये राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव लाने या दलितों के हक में आवाज उठाने के लिये हिंसा का ही रास्ता अपनायेंगें। यदि देखा जाये तो विशेष रूप से नक्सलवाद उन्ही क्षेत्रों मे फैला हुआ है जो स्वाधीनता के बात सामाजिक एवं आर्थिक रूप से देश की मुख्य धारा से कट गये। ये ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ के निवासियों व संसाधनों का स्वाधीनता से पूर्व अंग्रजों व स्थानीय भूस्वामियों ने भरपूर शोषण किया था। स्वतंन्त्रता के पश्चात भी कामोवेश ऐसी ही परिस्थिति जारी रही। ऐसी स्थिति का फायदा नक्सलवादियों ने उठाकर इन क्षेत्रों में अपने आन्दोलन के लिए आधार तैयार किया। दूसरी ओर केन्द्र तथा राज्य सरकारों ने नक्सल समस्या को न तो समझने का प्रयास किया और नही इन क्षेत्रों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की तरफ पर्याप्त ध्यान दिया। ज्यादातर राज्य सरकारों ने इसे मात्र कानून व्यवस्था का प्रश्न मानकर हल करने का प्रयास किया। इससे नक्सलवाद को कुछ समय के लिए षान्त अवश्य किया जा सकता है, परन्तु समाप्त कदापि नहीं किया जा सकता। नक्सलवाद के प्रादुर्भाव एवं क्रमिक प्रसार पर निगाह डालने से इसके बुनियादी कारणों का सहज अभास हो जाता हैं। नक्सलवाद से जुड़े साहित्यों एंव घटनाओं का अध्ययन करने के पश्चात इस समस्या के कुछ बुनियादी कारणों का पता चलता है, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्वत है :

1. नक्सलवाद उपेक्षित वर्ग द्वारा चलाया जा रहा आन्दोलन है।
2. इस आन्दोलन से जुडे लोग गरीब, अशिक्षित, बेरोजगार और बुनियादी सुविधाओं से वंचित है।
3. नक्सलवाद का प्रसार उन्हीं इलाको में अधिक है, जहां सामाजिक असमानता, बेकारी, गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा आदि की मौजूदगी है तथा इसके साथ–साथ सका प्रसार अबूझ, दुर्गम व समाज की मुख्य धारा से कटे हुए क्षेत्रों में अधिक है।
4. नक्सलवाद उन्मूलन में बल प्रयोग की तुलना में वार्तालाप, सहानुभूति, एंव सामाजिक व आर्थिक सुधारात्मक उपाय अधिक कारगर सिद्ध हुए है।[18]

सामान्यतः यह समझा जाता है कि जम्मू–कश्मीर की समस्या देश में सबसे बड़ी समस्या है, परन्तु यदि भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से देखें या समस्या के कारणों पर जाये तो नकसल समस्या देश के लिए ज्यादा जटिल है, क्योंकि इनकी जड़े देश की सामाजिक और आर्थिक नीतियों से जुड़ी हुई है।[9] इसलिए यह समस्या और विषम होती जा रही है। नक्सलवाद देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है। तमाम

प्रयासों के बावजूद नक्सली वारदातों पर काबू नहीं पाया जा सका है, यह हमारे लिए चिन्ता का विषय है। अब समय आ बया है कि हम नक्सलवाद से निपटने के लिये बहुआयामी रणनीति अपनाये क्योंकि उसे महज कानून व्यवस्था से जड़ी समस्या के तौर पर नहीं देखा जा सकता है।

ज्ञातव्य है कि नक्सली संगठनों का मुख्य उद्देश्य तो आदर्श स्थिति का परिचारक है, परन्तु क्रिया–क.लाप अत्यन्तहीन एवं निराशाजनक स्थिति का परिचायक है। नक्सली संगठनों को यह समझना चाहिए कि हिंसा के माध्यम से किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता हें इतिहास बताता है कि हिंसा से प्राप्त की हुई व्यवस्था ज्यादा समय तक नहीं चलती और अन्ततः टूट जाती हैं साथ ही सरकार को भी कानून व्यवस्था की सोच से ऊपर उठकर इनकी मूलभूत समस्याओं को दूर करने का भरसक प्रयास करना चाहिए, जिसे देश इस तरह की आंतरिक चुनौतियों का सामना करने से बच सके, और देश में चारों ओर खुशहाली एंव विकास की लहर दौड़ सके।

नक्सलवाद आज राष्ट्र की एक प्रमुख समस्या बन चुका है जिससे छुटकारा पाना अति आवश्यक है। इसके लिए हमारी सरकार को कुछ उपाय करने की आवश्यकता है। जिनके द्वारा नक्सलवाद का पूरी जरह से खात्मा न सही परन्तु उस पर काफी हद तक रोक तो लगायी जा सकती है। अथवा रोक लगाने की कोशिशें तो की जा सकती है और यह कहा भी गया है कि कोशिश करने से तो ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है। यह तो इन राज्यों में सुधारात्मक पहल करने की बात है। इसके लिए हमारी सरकार को सबसे पहला कदम यह उठाना होगा कि इन राज्यों में भूमि की चकबन्दी की जाये जिस प्रकार से भूमि चकबन्दी के द्वार पश्चिमी बंगाल में नक्सलवाद पर रोक लगायी जा सकी है उसी प्रकार से इन राज्यों में भी इस प्रक्रिया को अपनाये जाने की आवश्यकता है। साथ ही यह चकबन्दी बिना किसी राजनैतिक स्वार्थ के की जानी चाहिए, खासकर आन्ध्रप्रदेश तथा बिहार में Central Pera Military Force तथा राज्य पुलिस जोकि नक्सलवाद का खात्मा करने के लिए लगाई गई थी, अब इनका प्रयोग चकबन्दी कराने के लिए किया जाना चाहिए, जिससे यहां के निवासियों में यह विश्वास बढ़ेगा कि पुलिस उनके साथ है और वे पुलिस का साथ देगें। इसी के साथ जंगलों के कानूनों में भी पर्याप्त बदलाव किये जाने चाहिए। जंगलों की सम्पति को वहां पर रहने वाली जातियों तथा जनजातियों के द्वारा दोहन किये जाने की छूट दी जानी चाहिए, साथ ही उच्च जातियों के द्वारा इन जंगलों में किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को पूर्णतः प्रतिबन्धित कर दिया जाना चाहिए, इसी प्रकार सरकार को यहां पर ढांचागत सुविधाओं में भी वृद्धि करनी चाहिए यहां पर विकासात्मक कार्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, साथ ही यहां पर निवास करने वाली जनजातियों को देश की मुख्य धारा से जोड़ने की पहल करनी चाहिए। सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था कडी करनी चाहिए जिससे पड़ोसी देशों की खुफिया एजेन्सियां इन नक्सलवादियों को सहायता न पहुंचा सके। इसी के साथ सरकार को नक्सलवादियों से आमने सामने की बातचीत करने की पहल करनी होगी। जिससे इनकी समस्याओं का समाधान किया जा सके। समर्पण करने वाले नक्सलवादी कार्यकर्ताओं के समाज में पुनर्वास की पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए। इसी के साथ शिक्षा का विकास किया जाना चाहिए। इन सभी प्रयासों के द्वारा यहां की जनता का सरकार के प्रति विश्वास बढ़ेगा। जिसके कारण ये नक्सलवादियों का साथ न देकर सरकार का साथ देंगे। इस प्रकार के प्रयासों के द्वारा नक्सलवाद को खत्म करने का प्रयास किया जा सकता है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि नक्सलवाद उन्हीं क्षेत्रों में फैला हुआ है जो स्वाधीनता के बाद सामाजिक एंव आर्थिक रूप से देश की मुख्य धारा से कट गये। ये ऐसे अंग हैं जहाँ के निवासियों व संसाधनों का स्वाधीनता से पूर्व अग्रेजों व स्थनीय भूस्वामियों ने भरपूर शोषण किया था। स्वतंत्रता के पश्चात् भी ऐसी ही परिस्थितियां जारी रही इसी का फायदा नक्सलवादियों ने उठाकर इन क्षेत्रों में अपने आंदोलन के लिए आधार तैयार किया, दूसरी तरफ केन्द्र एंव राज्य सरकारों ने नक्सल समस्या को न तो समझने का प्रयास किया और नही इन क्षेत्रों के सामाजिक एंव आर्थिक विकास के स्तर को उठाया, जिस कारण आज नक्सली समस्या देश के आन्तरिक सुरक्षा के लिये सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है। तमाम प्रयासों के बावजूद भी नक्सली वारदातों पर काबू नहीं पाया जा सका है। यह हमारे लिए चिन्ता का विशय है।

सन्दर्भ सूची

डा0 नर्वदेश्वर शुक्ल, तूणीर, वर्ष 12 अंक 17/18, 15 अगस्त 2015 पृ0सं0 39
डा0 सजय कुमार पृ0सं0 45, भारत की आंतरिक सुरक्षा चुनौतिया, वर्ष 2011
डा0 संजय कुमार, वर्ष 2010, पृ0सं0 151 भारत की आन्तरिक सुरक्षा मुद्दे और चुनौतियां
क्रानिकल, फरवरी 2006, पृ स0 29
डा0 सुरेन्द्र कुमार मिश्र, तुणीर 15 अगस्त 2015,पृ0सं0 22
समसामयिक घटना चक्र, दिसम्बर 2009
अमर उजाला, 17 अक्टूबर 2004
डा0 विनोद मोहन मिश्रा एंव डा0 अभय कुमार श्रीवास्तव, तूणीर 15 अगस्त 2006 पृ0सं0 64
प्रतियोगिता दर्पण, अगस्त 2007, पृ0सं0 77–78
डा0 भारती चौहान, तूणीर, 26 जनवरी 2010,पृ0सं0 58–59
दैनिक जागरण, 18 मई 2010
हिन्दुस्तान, 18 जून 2010, सम्पादकीय
––––– तदैव––––––
डा0 संजय कुमार, भारत की आन्तरिक सुरक्षा चुनौतियाँ, वर्ष 2011, पृ0स0
दैनिक जागरण, 16 जुलाई 2010
हिन्दुस्तान 18 जुलाई 2010
अमर उजाला, 13 अगस्त 2017
डा0 संजय कुमार, भारत की आन्तरिक सुरक्षा चुनौतियाँ वर्ष 2011, पृ0सं0 54–55